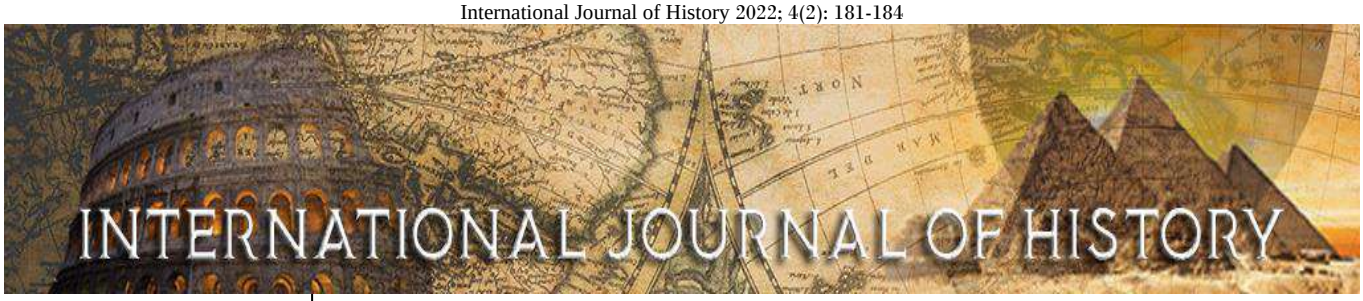

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2022; 4(2): 181-184
Received: 06-08-2022
Accepted: 07-09-2022

डॉ० श्याम मूर्ति भारती
इतिहास विभाग, रास नारायण महाविद्यालय, पण्डौल, मधुबनी, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ० श्याम मूर्ति भारती
इतिहास विभाग, रास नारायण महाविद्यालय, पण्डौल, मधुबनी, बिहार, भारत

आधुनिक बिहार : एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ० श्याम मूर्ति भारती

सारांश
बिहार, विहार शब्द का अपभ्रंश है, जिसका अर्थ है– निवास। बिहार भारत के सबसे पुराने बसे हुए स्थानों में से एक है। तथा इसका एक गौरवशाली अतीत रहा है। गंगा एवं उसकी सहायक नदियों के क्षेत्र में अवस्थित बिहार प्राचीनकाल में विशाल साम्राज्यों, शिक्षा केन्द्रों तथा संस्कृति का गढ़ था। मध्यकाल में यह पहली बार दिल्ली के प्रभाव में आया। बिहार को जीतने वाला प्रथम मुस्लिम विजेता बख्तियार खिलजी को माना जाता है। मध्यकालीन बिहार में अजीमाबाद (पटना) फारसी का सबसे बड़ा केन्द्र था। आधुनिक बिहार, जिसकी राजधानी पटना है। इसका ऐतिहासिक कालक्रम सामान्यतः यूरोपीय व्यापारियों के आगमन से माना जाता है। व्यापार हेतु जब यूरोपीय व्यापारियों का भारत आगमन हुआ तो इस क्रम में उनका बिहार भी आना हुआ। बिहार आनेवाले यूरोपीय व्यापारियों में पुर्तगीज, डच, फ्राँसीसी, डेनिस तथा अंग्रेज ईस्ट इंडिया कंपनी आदि प्रमुख थे। यूरोपीय व्यापारियों के भारत आगमन से भारत का सम्बंध अंतराष्ट्रीय व्यापार से जुड़ा। यूरोपीय व्यापारियों ने अपने औपनिवेशिक हितों को ध्यान में रखते हुए बिहार में अपनी फैक्ट्रियाँ स्थापित की। युरोपीय कंपनियों ने जब बिहार की राजनीति में हस्तक्षेप कर शासन संचालन का प्रयास किया। तो बिहार के लोगों नें इसका प्रबल विरोध किया। फलतः एक स्वतन्त्र राज्य की मांग उठी तथा आगे चलकर पृथक स्वतंत्र राज्य के रूप में बिहार का गठन हुआ।

कूटशब्द : विहार, औपनिवेशिक हित, बदहाली, राष्ट्रवादी भावना, दीकू, शोषण, सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, हड़िया।

प्रस्तावना
ऐतिहासिक रूप से दृष्टिपात करने पर यह स्पष्ट होता है कि यूरोपीय व्यापारियों के बिहार आगमन के साथ ही आधुनिक बिहार का प्रारम्भ होता है। सर्वप्रथम 17वीं शताब्दी में बिहार में यूरोपीय व्यापारियों का आगमन प्रारंभ हुआ। तत्कालीन समय में बिहार शोरा प्राप्ति हेतु प्रमुख स्थान माना जाता था। बिहार में सर्वप्रथम पुर्तगाली व्यापारियों का आगमन हुआ। पुर्तगालियों का व्यापारिक केन्द्र हुगली (वर्तमान पश्चिम बंगाल में) था। जहाँ से उनका पटना आवागमन होता था। पुर्तगीज व्यापारी अपने साथ मसाला, चीनी मिट्टी के बर्तन इत्यादि लेकर आते तथा पटना से सूती वस्त्र ले जाते थे। पूर्तगाली व्यापारियों के पश्चात बिहार में डचों का आगमन हुआ। डच कारखाना वर्तमान पटना कॉलेज के उत्तरी हिस्से की इमारत थी। डच व्यापारियों के पश्चात बिहार में ब्रिटिश कंपनी का आगमन हुआ। प्रारम्भिक काल में अंग्रेजों की रूचि सूती वस्त्र, अनाज तथा शोरे की प्राप्ति में थी। किन्तु बाद में उनका आकर्षण नील के उत्पादन हेतु बढ़ा। तत्कालीन बिहार के सूबेदार शाईस्ता खाँ ने 1680 ई० में अंग्रेजी कंपनी के व्यापार पर 3.5 प्रतिशत कर लगा दिया। जिससे नाराज होकर जॉब चर्नाक ने हुगली शहर को वर्ष 1686 में लूट लिया। वर्ष 1717 में दोनों पक्षों में समझौता हो जाने के कारण फर्रूखशियर द्वारा पुनः अंग्रेजों को इस क्षेत्र में व्यापार करने की स्वतंत्रता प्रदान कर दी। इस दौरान कंपनी ने व्यापार में घूसखोरी की प्रथा को प्रारंभ किया।

बिहार में यूरोपीय कंपनियों के आगमन के क्रम में वर्ष 1774 में बिहार में डेन फैक्ट्री की स्थापना हुई। बिहार क्षेत्र में औपनिवेशिक शक्तियों के आकर्षण का प्रमुख कारण शोरा था। जिसके व्यापार में युरोपीय कंपनियों को मुनाफे की पर्याप्त संभावनाएं विद्यमान थी। वर्ष 1770 एवं 1783 ई० में अकाल पड़ने के कारण इस समस्या के समाधान हेतु पटना में एक गोलघर का निर्माण किया गया ताकि अनाज का भंडारण किया जा सके। औपनिवेशिक व्यवस्था के अन्तर्गत 1793 ई० में लॉर्ड कार्नवालिस द्वारा बिहार क्षेत्र में स्थायी बन्दोबस्त प्रणाली को लागू किया गया।

यूरोपीय कंपनियों का भारत में आगमन तो व्यापारिक उद्देश्यों के संदर्भ में हुआ था। किन्तु भारत आगमन के पश्चात उनकी महात्वाकांक्षाओं में वृद्धि हुई तथा वे राजनीतिक सत्ता की प्राप्ति हेतु प्रयत्नशील हो गई। राजनीतिक सत्ता की प्राप्ति हेतु अंग्रेजों के लिए बुनियाद सिद्ध हुआ प्लासी का युद्ध (1757 ई०)। जिसमें अंग्रेजों ने सिराजुद्दौला को पराजित किया। इस बुनियाद पर भवन का निर्माण हुआ बक्सर (1765 ई०) के युद्ध के पश्चात।

जब अंग्रेजों ने भारत के तीन शासकों की सम्मिलित सेना को एक साथ पराजित कर दिया। यूरोपीय कंपनियाँ औपनिवेशिक हितों से प्रेरित थी। अपने हितों की पूर्ति के लिए ये कंपनियां निरन्तर प्रयत्नशील थी। इस बात का आभास जब भारतीय जनता को हुआ तो जनता में इनका व्यापक विरोध शुरू हो गया। ब्रिटिश शासन के विरूद्ध भारतीयों के विरोध को निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत देखा जा सकता है:–

नोनिया विद्रोह

नोनिया विद्रोह का काल 1770–1800 ई० के मध्य माना जाता है। यह विद्रोह नोनिया समुदाय द्वारा किया गया था। जो शोरे का उत्पादन करते थे। तथा बिचौलियों द्वारा किए जानेवाले शोषण से परेशान थे। विद्रोह के केन्द्र हाजीपुर, तिरहुत, सारण तथा पूर्णिया आदि क्षेत्र थे। इन स्थानों पर व्यापक रूप में शोरे का उत्पादन होता था। शोरे का उपयोग बारूद बनाने में किया जाता था।

तमाड़ विद्रोह

तत्कालीन बिहार एवं वर्तमान झारखंड के छोटानागपुर क्षेत्र में यह विद्रोह जनजातियों द्वारा स्थानीय जमींदारों के विरूद्ध 1789–94 ई० के मध्य किया गया था।

चेरो विद्रोह

चेरो विद्रोह 1800–1802 ई० के मध्य पलामू क्षेत्र में हुआ था जिसका नेतृत्व भूषण सिंह ने किया था। यद्यपि अंग्रेजों ने इस विद्रोह का दमन कर दिया।

वहाबी आंदोलन

प्रारंभिक अवस्था में यह आंदोलन सामाजिक सुधार के उद्देश्यों को लेकर शुरू हुआ। किन्तु बाद में इसने राजनीतिक एवं आर्थिक उद्देश्यों से प्रेरित होकर उन क्षेत्रों में सुधार हेतु भी प्रयास किए। वहाबी आंदोलन का मुख्य केन्द्र पटना था। तथा इसके प्रवर्तक मुहम्मद बिन अब्दुल बहाब थे।

कोल विद्रोह

भूमि सम्बंधी असंतोष के कारण छोटानागपुर क्षेत्र में हुए इस विद्रोह के नेता थे– बुद्धो भगत, विन्दराय, सिंगराय एवं सुर्गा मुंडा। कोल विद्रोह मुंडा जनजाति द्वारा किया गया था। जिससे 'हो', उरांव एवं अन्य जनजातियों द्वारा समर्थन दिया गया था। कोल विद्रोह का समय 1831–32 ई० माना जाता है। इस विद्रोह का भी एक कारण भी था। जिसके अन्तर्गत ब्रिटिश सरकार ने 'हड़िया' (चावल से निर्मित शराब) पर उत्पादन शुल्क लगा दिया था। जनजाति 'हड़िया' अपने उपयोग के लिए तैयार करते थे।

भूमिज विद्रोह

ब्रिटिश सरकार की शोषणकारी लगान व्यवस्था के विरोध स्वरूप हुए इस विद्रोह का नेतृत्व गंगा नारायण सिंह ने किया था। वर्ष 1932–33 में यह विद्रोह वीरभूमक्षेत्र में हुआ था। इस विद्रोह का प्रभाव सिंहभूम क्षेत्र तक फैल गया था।

संथाल विद्रोह

भारतीय इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण विद्रोहों में से एक विद्रोह, संथाल विद्रोह को माना जाता है। वर्ष 1855–56 में यह विद्रोह संथाल जनजातियों द्वारा दामन–ए–कोह क्षेत्र (भागलपुर से राजमहल तक विस्तृत भाग) में प्रारम्भ हुआ था। यह विद्रोह ब्रिटिश सरकार के अमानवीय कानूनों, पुलिस, ठेकेदारों तथा बाहरी लोगों, जिन्हें वे 'दीकू' के नाम से सम्बोधित करते थे। उनके विरूद्ध हुआ था। इस व्रिदोह के नेता सिद्धू, कान्हू, चाँद तथा भैरव थे। अंग्रेजों ने कैप्टन एलेक्जेन्डर तथा लेफ्टिनेन्ट थॉमसन के माध्यम से इस विद्रोह का दमन किया था।

लोटा विद्रोह

यह विद्रोह 1857 की क्रांति से एक वर्ष पूर्व मुजफ्फरपुर जेल में बंद कैदियों द्वारा किया गया था। जेल में कैदियों को पीतल का लोटा उपलब्ध कराया जाता था। किन्तु सरकार ने इस व्यवस्था को परिवर्तित कर कैदियों को मिट्टी का लोटा उपलब्ध कराने का आदेश दिया। जिसके विरोध स्वरूप जेल के कैदियों ने विद्रोह कर दिया। जिसे लोटा विद्रोह के रूप में जाना जाता है।

1857 की क्रान्ति और बिहार

1857 की क्रान्ति ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध स्वतंत्रता हेतु भारत के संघर्ष के दौरान प्रथम बड़ा विद्रोह था जिसने भारत में औपनिवेशिक शासन की बुनियाद को हिला दिया। 1857 की क्रान्ति में बिहार की महत्वपूर्ण भागीदारी रही। इस क्रान्ति का प्रारम्भ 10 मई 1857 को मेरठ छावनी से हुआ था। बिहार में तत्कालीन बिहार (झारखंड सम्मिलित) देवघर जिले में अवस्थित रोहिणी ग्राम में 12 जून, 1857 को सेना की 32 वीं रेजिमेन्ट ने विद्रोह का बिगुल फूंक दिया तथा दो अंग्रेज अधिकारियों की हत्या कर दी। पटना में इस विद्रोह का नेतृत्व पुस्तक, विक्रेता पीर अली ने किया। अफीम व्यापार के एजेन्ट लॉयल ने इस विद्रोह का दमन करना चाहा। किन्तु अपने सैनिकों के साथ मारा गया। तत्कालीन पटना के कमिश्नर टेलर ने इस विद्रोह का दमन किया। पीर अली सहित 16 विद्रोहियों को गिरफ्तार कर फाँसी की सजा दी गयी।

भारतीय स्वतंत्रता के प्रथम संग्राम के नायकों में बाबू कुँवर सिंह का विशिष्ट स्थान है। बिहार के इतिहास में जब भी 1857 के क्रांति के अध्याय को लिखा जायेगा, तो वह अध्याय कुँवर सिंह के उल्लेख के बिना अधूरा रहेगा। बिहार में जब 1857 क्रांति की क्रांति की चिंगारी फैलने लगी तो इसी क्रम में दानापुर सैनिक मुख्यालय के सैनिकों ने जुलाई, 1857 में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह का नेतृत्व कुँवर सिंह द्वारा किया जाय। इस आकांक्षा से विद्रोह में सम्मिलित सैनिकों ने कुँवर सिंह से निवेदन किया। जिसे कुँवर सिंह ने स्वीकार कर लिया। कुँवर सिंह स्वयं भी ब्रिटिश शासन से असंतुष्ट थे। कुँवर सिंह का कथन था – '' मैं जहाँ भी हूँ जगदीशपुर वहीं है।'' कुँवर सिंह ने जगदीशपुर के किले में गोला बारूद एवं बंदूक बनाने का कारखाना स्थापित किया था। सैनिकों का मनोबल तथा उत्साह देख कर कुँवर सिंह ने सैनिकों का नेतृत्व करते हुए आरा क्षेत्र पर कब्जा कर लिया। जो ब्रिटिश शासन के लिए एक चुनौती थी। अतः आरा को विद्रोही सैनिकों से मुक्त करवाने के प्रयास में कैप्टन डनवर की मृत्यु हो गयी। 23 अप्रैल, 1858 को गंगा नदी पार करके जगदीशपुर लौटने के क्रम में ब्रिटिश सेना को पराजित किया। जिस सेना का नेतृत्व कैप्टन ली ग्रांड कर रहा था। अंग्रेजी सेना के साथ संघर्ष के दौरान कुँवर सिंह भी घायल हो गए तथा 26 अप्रैल 1858 को उनकी मृत्यु हो गयी। कुँवर सिंह की मृत्यु के पश्चात भी क्रांति की चिंगारी कम नहीं हुई। तथा कुँवर सिंह के पश्चात अमर सिंह ने विद्रोह की धारा को बनाए रखा। तथा उन्होंने जगदीशपुर में समानान्तर भारतीय सरकार की स्थापना की जिसके प्रमुख हरकिशन सिंह थे।

मुंडा विद्रोह

मुंडा विद्रोह को उलगुलान अथवा महान हलचल भी कहा जाता है। मुंडा विद्रोह का काल 1895–1900 ई० के मध्य माना जाता है। जिसका नेतृत्व बिरसा मुंडा ने किया था। यह विद्रोह जनजातियों के तीव्र विरोध के लिए जाना जाता है। मुंडा विद्रोह का कारण औपनिवेशिक शासन द्वारा जनजातीय जीवन शैली व सामाजिक संरचना एवं संस्कृति में हस्तक्षेप करना तथा दिकुओं एवं स्थानीय जमींदारों द्वारा शोषण एवं उत्पीड़न था।

जनजातियों के मध्य सामूहिक सम्पत्ति की अवधारणा थी जिसे खुटकट्टी व्यवस्था कहा जाता था। स्थानीय जमींदारों, ठेकेदारों तथा महाजनों ने ब्रिटिश शासन के संरक्षण में इन क्षेत्रों में हस्तक्षेप करना प्रारम्भ कर दिया। जनजातियों द्वारा जिसका व्यापक विरोध किया गया। जनजातियों के मध्य यह आंदोलन एक सुधारवादी प्रयास के रूप में प्रारम्भ हुआ था। इस विद्रोह के नायक बिरसा मुंडा को उनके अनुयायी धरती अब्बा का अवतार मानते थे।

कांग्रेस की स्थापना तथा बिहार

1885 ई० को श्री ए. ओ. हयूम की पहल पर बम्बई (वर्तमान में मुंबई) के गोकुलदास संस्कृत विद्यालय में देश के विभिन्न प्रांतों के राजनीतिक एवं सामाजिक विचारधारा लोगों की उपस्थिति में कांग्रेस की स्थापना की गई। जिसके प्रथम अध्यक्ष डब्ल्यू. सी. बनर्जी थे।

देश के सभी क्षेत्रों तक पहुँच स्थापित करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में कांग्रेस के सत्र आयोजित करने का निर्णय लिया गया। कांग्रेस की स्थापना के साथ औपनिवेशिक शासन से भारत की स्वतंत्रता का संघर्ष एक संगठित रूप से प्रारम्भ हुआ। कांग्रेस की स्थापना के पश्चात विभिन्न प्रान्त के प्रतिनिधियों ने इसके अधिवेशनों में भाग लिया। कांग्रेस के दूसरे अधिवेशन में बिहार प्रान्त के 31 प्रतिनिधियों ने भाग लिया तथा इसके तीसरे अधिवेशन में बिहार क्षेत्र के मात्र 2 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

बिहार के बाँकीपुर में, 1912 ई० में कांग्रेस के अधिवेशन का आयोजन हुआ जो इसका 27वाँ अधिवेशन था। इस अधिवेशन की अध्यक्षता आर०एन० माधोलकर द्वारा की गई। कांग्रेस का 37वाँ अधिवेशन 1922 ई० में बिहार प्रान्त के गया में आयोजित हुआ था। जिसकी अध्यक्षता सी०आर० दास ने की थी।

बिहार में किसान आंदोलन

ब्रिटिश शासन ने अपने औपनिवेशिक हितों को ध्यान में रख कर अपनी अर्थव्यवस्था का संचालन किया। जिसका परिणाम भारतीय कृषकों की बदहाली के रूप में सामने आया। फलतः देश के अन्य किसानों की भाँति ही बिहार के किसानों ने भी आजादी के संघर्ष में अपनी भूमिका निभायी। क्योंकि 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में बंगाल के बगान मालिकों द्वारा बिहार के किसानों का व्यापक रूप से शोषण किया जा रहा था। जिससे आहत होकर वर्ष 1866–67 में बिहार के पण्डौल क्षेत्र में किसानों ने विद्रोह किया। कृषक वर्ग में अब जागृति आने लगी थी। फलतः बिहार में अवस्थित दरभंगा के किसानों ने भी तत्कालीन दरभंगा के राजा के विरूद्ध वर्ष 1883–84 में विद्रोह किया था।

कृषक वर्ग का विभिन्न माध्यमों से, विभिन्न क्षेत्रों में शोषण किया जा रहा था। जिसका एक उदाहरण बिहार के चम्पारण क्षेत्र में तीनकठिया प्रथा का प्रचलन था। जिसके अन्तर्गत नील उत्पादक किसानों से बलपूर्वक नील की खेती करवायी जाती थी। कृषकों के शोषण की बात जब गांधीजी तक पहुँची तो गाँधीजी ने भारत में अपना प्रथम सत्याग्रह चम्पारण में प्रारम्भ किया। बिहार के मुंगेर जिले में वर्ष 1922–23 में शाह मुहम्मद जुबैर तथा श्री कृष्ण सिंह के प्रयासों से किसान सभा का गठन हुआ। 1929 ई० में स्वामी सहजानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में बिहार प्रान्तीय किसान सभा की स्थापना की गई।

बिहार में राष्ट्रवादी भावना का विकास

19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारत में राष्ट्रीय आंदोलन का तीव्रता से विकास हुआ। औपनिवेशिक नीतियाँ राष्ट्रीय आंदोलन के विकास हेतु कारक बनी। बिहार में राष्ट्रवादी भावना का विकास राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन हेतु चेतना और जन–आधार का परिणाम है। बिहार में राष्ट्रवादी जागरण का प्रारम्भ कांग्रेस युग के प्रारंभिक दिनों से माना जाता है। बिहार में क्रांतिवाद के विचार के प्रचार–प्रसार हेतु इन्दुलाल तथा कुछ अन्य क्रान्तिकारियों का महतवपूर्ण योगदान था। क्रांतिवाद के विचार के विकास के क्रम में बाबाजी ठाकुर दास, डॉ० ज्ञानेन्द्र पाण्डेय तथा केदारनाथ बनर्जी आदि की सक्रियता ने लोगों में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। बिहार में वर्ष 1908 की घटना ने तीव्रता से क्रांतिकारी भावना को प्रेरित किया जब खुदीराम बोस तथा प्रफुल्ल चाकी द्वारा मुजफ्फरपुर में जिला जज किंग्सकोर्ड समझ कर बम फेंका गया। इसके पश्चात प्रफुल्ल चाकी ने आत्महत्या कर ली। तथा खुदीराम बोस को फांसी की सजा सुनायी गयी।

चम्पारण सत्याग्रह

बिहार में चम्पारण चेत्र के किसानों की समस्या से जब गाँधीजी को अवगत कराया गया तो गांधीजी ने इस क्षेत्र में प्रचलित तीनकठिया प्रथा के विरूद्ध सत्याग्रह किया। जिसे चम्पारण सत्याग्रह (1917 ई०) के नाम से जाना जाता है।

बिहार में असहयोग आंदोलन

बिहार में असहयोग आंदोलन से जुड़े प्रमुख व्यक्तियों में डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, मजहरूल हक, ब्रजकिशोर प्रसाद तथा मोहम्मद शफी आदि प्रमुख थे। असहयोग आंदोलन के दौरान बिहार विद्यापीठ की स्थापना की गयी। जिसका उद्घाटन गांधीजी ने किया था। इस आंदोलन का सबसे अधिक प्रभाव मुजफ्फरपुर तथा शहाबाद आदि जिलों में देखा गया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन एवं बिहार

दिसम्बर 1929 ई० में पं० जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में लाहौर में सविनय अवज्ञा आंदोलन का प्रस्ताव पारित हुआ। सविनय अवज्ञा आंदोलन के क्रम में गांधीजी के दांडी यात्रा के दौरान गिरिवरधारी चौधरी उर्फ कारो बाबू ने भाग लिया था। बिहार में सविनय अवज्ञा आंदोलन के प्रांतीय प्रशासक दीपनारायण सिंह को नियुक्त किया गया। बिहार में सविनय अवज्ञा आंदोलन का प्रारम्भ 15 अप्रैल 1930 को हुआ। जब चम्पारण तथा सारण जिलों में राष्ट्रवादियों द्वारा नमकीन मिट्टी से नमक का निर्माण किया गया। पटना जिले में अवस्थित नखासपिंड को नमक कानून भंग करने हेतु केन्द्र के रूप में चुना गया।

भारत छोड़ो आंदोलन तथा बिहार

भारत छोड़ो आंदोलन में गांधीजी द्वारा 'करो या मरो' का नारा दिया गया। इस आंदोलन का प्रसार भारत के अन्य प्रान्तों के समान बिहार में भी हुआ। डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटी के माध्यम से भारत छोड़ों आंदोलन में भावी संघर्ष का आह्वान किया। ब्रिटिश शासन द्वारा आंदोलन के दमन हेतु 'ऑपरेशन जीरो आवर' के माध्यम से आंदोलन से जुड़े राष्ट्रवादियों को गिरफ्तार कर बांकीपुर जेल भेज दिया गया।

बिहार के राष्ट्रवादियों द्वारा बिहार विधान सभा पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने का प्रयास किया गया। किन्तु पटना के कलक्टर डब्ल्यू०जी० आर्चर ने इन राष्ट्रवादियों पर गोली चलाने का आदेश दिया। जिसमें बिहार के विभिन्न जिलों से सम्बन्धित 7 राष्ट्रवादी युवकों की मृत्यु हो गयी। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जय प्रकाश नारायण की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण रही। उन्होंने वर्तमान झारखंड के हजारीबाग जिले में अवस्थित जेल से फरार होकर नेपाल के राजविलास जंगल में आजाद दस्ते का गठन किया। जिसका उद्देश्य छापामार युद्ध तथा तोड़–फोड़ के माध्यम से ब्रिटिश संपत्ति को नुकसान पहुँचाना था। आजाद दस्ते में सम्मिलित राष्ट्रवादियों को प्रशिक्षित करने का कार्य सरदार नित्यानंद सिंह द्वारा किया गया।

निष्कर्ष

आधुनिक बिहार अनेक जन ऐतिहासिक घटनाओं का साक्षी है। जिनसे गुजरते हुए वर्तमान काल में विकास की दिशा में अग्रसर है। बिहार का दो बार विभाजन भी हुआ। प्रथम बार 1936 ई० में, जब उड़ीसा बिहार से पृथक हुआ तथा वर्ष 2000 में, जब बिहार से पृथक होकर झारखंड राज्य का निर्माण हुआ। वर्तमान बिहार राज्य पूरे भारत में जनसंख्या की दृष्टि से तीसरे स्थान पर है तथा अपनी विशिष्ट पहचान हेतु भारत में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

सन्दर्भ

1. सलोना श्याम, बिहार समग्र, केबीसी नैनो पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली। पृ०–67–71
2. तथैव पृ०–72–79
3. तथैव पृ०– 82–86
4. बर्णवाल, महेश कुमार, भारती, डॉ० श्याम मूर्ति, बिहार एक समग्र अध्ययन (2019) कॉसमॉस पब्लिकेशन, दिल्ली। पृ०– 35–44
5. बिहार सामान्य ज्ञान एवं समसामयिकी, (2022), स्पर्धा प्रकाशन, जमशेदपुर, झारखण्ड। पृ०– 52–54
6. सिंह, सुनील कुमार, सामान्य ज्ञान (2016), लूसेंट पब्लिकेशन, पटना। पृ०– 48–51।
7. कुमार रितेश, क्राउन सामान्य ज्ञान, (2021), क्राउन पब्लिकेशन्स, राँची। पृ०–88
8. तथैव पृ०– 97–98
9. तथैव पृ०– 100
10. तथैव पृ०–108